

सामाजिक विज्ञान

(इतिहास)

अध्याय-10: अठारहवीं शताब्दी में नए
राजनितिक गठन



अठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के दौरान उपमहाद्वीप में कुछ विशेष रूप से उल्लेखनीय घटनाएँ घटी। एक अन्य शक्ति यानि ब्रिटिश सत्ता ने पूर्वी भारत के बड़े-बड़े हिस्सों को सफलतापूर्वक हड़प लिया था। अठारहवीं शताब्दी में नए राज्यों का गठन हुआ।

मुगल साम्राज्य के पतन के कारण

अठारहवीं शताब्दी की शुरुआत तक, मुगल साम्राज्य का पतन शुरू हो गया था। इस पतन के कई कारण इस प्रकार हैं:

- औरंगजेब ने दक्कन में लंबे युद्ध लड़े थे। इन युद्धों ने साम्राज्य के सैन्य और वित्तीय संसाधनों को खत्म कर दिया।
- औरंगजेब के उत्तराधिकारी कमजोर और अक्षम थे। वे रईसों और मनसबदारों की बढ़ती शक्तियों पर रोक लगाने में सक्षम नहीं थे।
- मुगल साम्राज्य में कई रईसों ने कई प्रांतों में राज्यपालों का पद संभाला। चूंकि उनके पास राजनीतिक, आर्थिक और सैन्य शक्ति थी, इसलिए बाद के मुगल राजाओं के लिए उनके अधिकार पर रोक लगाना मुश्किल हो गया।
- जैसे-जैसे राज्यपालों ने अपने प्रांतों के राजस्व को नियंत्रित किया, परिणामस्वरूप मुगल साम्राज्य के राजस्व में गिरावट आई।
- कई किसानों और जमींदारों ने मुगल सत्ता के खिलाफ विद्रोह किया। कई बार ये विद्रोह उच्च कराधान के कारण हुए।
- कई स्थानीय सरदार शक्तिशाली हो गए। औरंगजेब के बाद सत्ता में आने वाले कमजोर राजाओं के कारण, स्थानीय सरदारों ने धीरे-धीरे क्षेत्र के आर्थिक संसाधनों को नियंत्रित करना शुरू कर दिया। बाद के मुगल राजनीतिक और आर्थिक सत्ता को केंद्र से विभिन्न क्षेत्रों में स्थानांतरित करने से रोकने में सक्षम नहीं थे।
- 1739 में नादिर शाह के आक्रमण ने साम्राज्य को कमजोर कर दिया। उसने दिल्ली शहर को लूटा। बाद में 1748 और 1761 के बीच उत्तर भारत पर पांच बार आक्रमण करने वाले

अहमद शाह अब्दाली के छापे ने पहले से ही कमजोर मुगल शासन को और खराब कर दिया।

- राजनीतिक सत्ता हासिल करने के लिए रईसों के विभिन्न समूहों के बीच एक प्रतियोगिता थी। रईसों के दो प्रमुख समूह ईरानी और तुरानी थे। बाद के कई मुगल, अमीरों के इन समूहों के हाथों की कठपुतली मात्र थे। रईसों के समूहों द्वारा फर्रुखसियार और आलमगीर द्वितीय की हत्या ने मुगल साम्राज्य की स्थिति को बुरी तरह से खराब कर दिया।



मुगल सम्राट फर्रुख सियार

नए राज्यों का उदय

मुगल साम्राज्य के विघटन के बाद कई नए राज्यों का उदय हुआ। इन नए राज्यों को मोटे तौर पर निम्नलिखित तीन समूहों में वर्गीकृत किया जा सकता है:

- अवध, हैदराबाद और बंगाल जैसे पुराने मुगल राज्य: हालांकि इन राज्यों के शासक स्वतंत्र थे, लेकिन उन्होंने मुगल शासन के साथ अपने संबंध नहीं तोड़े।
- वतन जागीर के रूप में जिन राज्यों ने मुगल शासन के तहत अधिक स्वतंत्रता का आनंद लिया था। इनमें कई राजपूत राज्य शामिल थे।

- तीसरे समूह में मराठा, सिख और जाट जैसी योद्धा जातियों के नियंत्रण वाले राज्य शामिल थे।

मुगल साम्राज्य के साथ लंबी लड़ाई के बाद तीनों समूह स्वतंत्रता प्राप्त करने में सक्षम थे।

SHIVOM CLASSES
8696608541

पुराने मुगल राज्य

हैदराबाद

- हैदराबाद राज्य के संस्थापक, निजाम-उल-मुल्क आसफ जाह मुगल सम्राट फारुख सियार के दरबार में एक प्रभावशाली सदस्य थे।



निजाम - उल - मुल्क आसफ झा

- वह दक्कन प्रांतों का मुगल गवर्नर था। 1720-22 के दौरान, मुगलों के कमजोर शासन के कारण आसफ जाह ने दक्कन पर राजनीतिक और आर्थिक नियंत्रण हासिल कर लिया।
- आसफ जाह ने अपने दरबार में उत्तर भारत से कई कुशल सैनिकों और प्रशासकों को लाया। उन्होंने मनसबदारी व्यवस्था की मुगल नीति का पालन किया और नियुक्त मनसबदारों को जागीरें दीं।
- हैदराबाद राज्य लगातार पश्चिम में मराठों और दक्षिण में नायक के रूप में जाने जाने वाले स्वतंत्र तेलुगु योद्धाओं के प्रमुखों के खिलाफ संघर्षों में लगा हुआ था।
- निजाम की शक्ति को पूर्व में अंग्रेजों द्वारा नियंत्रित किया गया था क्योंकि निजाम कोरोमंडल तट में कपड़ा उत्पादक क्षेत्रों पर नियंत्रण हासिल करना चाहता था।

अवधी

- अवध राज्य की स्थापना बुरहान-उल-मुल्क सआदत खान ने की थी, जिसे पहले मुगल शासकों द्वारा इसके सूबेदार के रूप में नियुक्त किया गया था।



बुरहान – उल – मुल्क सआदत खान

- मुगल शासन के तहत अवध एक समृद्ध क्षेत्र था क्योंकि गंगा घाटी के समृद्ध जलोढ़ मैदानों पर इसका नियंत्रण था और उत्तर भारत और बंगाल के बीच मुख्य व्यापार इसी से होकर गुजरता था।
- बुरहान उल मुल्क ने सूबेदारी (राजनीतिक), दीवानी (वित्तीय) और फौजदारी (सैन्य) के पदों पर कार्य किया। इससे अवध प्रांत में उसकी स्थिति मजबूत हुई।
- उसने अवध राज्य पर अपने नियंत्रण को और मजबूत करने के लिए मुगलों द्वारा नियुक्त कार्यालय धारकों या जागीरदारों की संख्या कम कर दी। उनके स्थान पर, उसने अपने स्वयं के वफादार अधिकारियों को जागीरदार नियुक्त किया।
- उसने विभिन्न राजपूत जमींदारों और रोहिलखंड के अफगानों की उपजाऊ भूमि पर भी अधिकार कर लिया।
- अवध में, कर एकत्र करने का अधिकार सबसे अधिक बोली लगाने वालों को बेच दिया गया था जिन्हें इजरदार कहा जाता था। ये इजरदार राज्य को एक निश्चित राशि देने के लिए सहमत हुए।
- राज्य में बैंकों और साहूकारों का प्रभाव बढ़ गया क्योंकि राज्य ऋण के लिए उन पर निर्भर था। बैंकों ने राज्य को अनुबंधित राशि के भुगतान की गारंटी दी, जिसे इजरदारों द्वारा भूमि से राजस्व के रूप में एकत्र किया जाना था।
- बदले में, इजरदारों को भू-राजस्व के आकलन और संग्रह में खुली छूट दी गई थी।

- इन सभी घटनाक्रमों ने व्यापारियों और बैंकरों के एक नए वर्ग का निर्माण किया जिन्होंने राज्य की राजस्व व्यवस्था को प्रभावित किया।

SHIVOM CLASSES
8696608541

बंगाल

• नवाब मुर्शीद कुली खान ने मुगलों से बंगाल का नियंत्रण जब्त कर लिया। इससे पहले, उन्हें बंगाल के राज्यपाल के डिप्टी के रूप में नियुक्त किया गया था।

**नवाब मुर्शीद कुली खान**

- मुर्शीद कुली खान बंगाल के राजस्व प्रशासन का प्रभारी था। मुगल प्रभाव को कम करने के प्रयास में, उसने सभी मुगल जागीरदारों को उड़ीसा में स्थानांतरित कर दिया।
- उसने बंगाल की सभी राजस्व उत्पादक भूमि का पुनर्मूल्यांकन किया और जमींदारों से पूरी सख्ती के साथ नकद में राजस्व एकत्र किया।
- इसने जमींदारों को साहूकारों और बैंकरों से पैसे उधार लेने के लिए मजबूर किया। जो लोग राजस्व का भुगतान करने में सक्षम नहीं थे, उन्हें अपनी जमीनें बेचनी पड़ीं।
- धीरे-धीरे राज्य में व्यापारियों और बैंकरों का महत्व बढ़ता गया। अलीवर्दी खान के शासन काल में जगत सेठ का बैंकिंग घराने के अत्यधिक समृद्ध होने पर उनकी स्थिति और भी सुदृढ़ हो गई।

हम उपरोक्त स्वतंत्र राज्यों में निम्नलिखित तीन सामान्य विशेषताओं का उदय पाते हैं:

- स्वतंत्र राज्यों को तराशने वाले मुगल कुलीन जागीरदारी व्यवस्था में पूरी तरह से विश्वास नहीं करते थे। ऐसा इसलिए है क्योंकि उन्होंने महसूस किया कि शक्तिशाली जागीरदार राज्य के कमजोर शासकों को उखाड़ फेंक सकता है।
- इन राज्यों के शासक राजस्व वसूली के लिए राज्य के अधिकारियों पर निर्भर नहीं थे। इसके बजाय उन्होंने सबसे अधिक बोली लगाने वालों को राजस्व संग्रह के अधिकार बेच दिए। इसने भारतीय किसानों की स्थिति को बर्बाद कर दिया।

• इन राज्यों में शक्तिशाली बैंकरों और व्यापारियों के वर्ग का उदय हुआ क्योंकि उन्होंने राजस्व किसानों को धन उधार दिया और अपने स्वयं के एजेंटों के माध्यम से भूमि से राजस्व एकत्र किया। वे नई राजनीतिक व्यवस्था की नीतियों को प्रभावित कर रहे थे।

राजपूत

- मुगल शासन के अधीन कई राजपूत राजा मनसबदार थे। आमेर और जोधपुर के शासकों ने मुगल शासन के अधीन सेवा की थी और जब भी आवश्यकता हुई उन्होंने साम्राज्य को अपनी सैन्य सहायता प्रदान की थी।
- इन राजपूत शासकों को अपनी वतन जागीर पर शासन करने की काफी स्वतंत्रता थी। मुगल साम्राज्य के विघटन के साथ, इन शासकों ने अब उन क्षेत्रों पर अपना नियंत्रण बढ़ाना शुरू कर दिया जो उनकी वतन जागीर के बगल में पड़े थे।
- अजीत सिंह (जोधपुर के शासक) अपने प्रभाव क्षेत्र का विस्तार करने की कोशिश कर रहे शासकों में से एक थे।
- प्रभावशाली राजपूत परिवारों ने गुजरात और मालवा के समृद्ध प्रांतों पर सूबेदारी का दावा करने की कोशिश की। जोधपुर के राजा अजीत सिंह और अंबर के राजा जय सिंह ने अपने वतन के पड़ोसी क्षेत्रों पर नियंत्रण हासिल करने की कोशिश की।
- इस प्रकार, नागवार को जोधपुर में मिला लिया गया। एम्बर ने बूंदी के बड़े हिस्से पर कब्जा कर लिया।
- जयपुर में अपनी नई राजधानी की स्थापना के साथ सवाई राजा जय चंद्र प्रमुखता से उभरे। उन्हें आगरा की सूबेदारी भी दी गई थी।



सवाई राजा जय सिंह

- हालांकि, एक शक्तिशाली शक्ति के रूप में मराठों के उदय ने उनके आगे के विस्तार पर रोक लगा दी।

SHIVOM CLASSES
8696608541

योद्धा जातियों का उदय

मराठा

- शिवाजी (1627-1680) के अधीन मराठा एक शक्तिशाली शक्ति के रूप में उभरे जो लगातार मुगल क्षेत्रों पर छापा मार रहे थे।
- मराठा पश्चिमी भारत में देशमुखों के समर्थन से एक स्वतंत्र राज्य स्थापित करने में सक्षम थे, जो योद्धा परिवारों का एक शक्तिशाली कबीला था।



शिवाजी के अधीन मराठा शक्तिशाली शक्ति के रूप में उभरे

- शिवाजी की मृत्यु के बाद सत्ता पेशवाओं के हाथों में चली गई। पूना मराठा साम्राज्य की राजधानी थी।
- पेशवाओं के शासन में मराठा देश में एक शक्तिशाली शक्ति बन गए। उन्होंने कई मुगल क्षेत्रों पर छापा मारा और मुगल सेनाओं को उन क्षेत्रों में लगने पर मजबूर कर दिया जहां उनकी खाद्य आपूर्ति आसानी से बाधित हो सकती थी।
- 1720 और 1761 के बीच मराठा साम्राज्य का बहुत विस्तार हुआ। मालवा और गुजरात के मुगल राज्यों पर उनके द्वारा कब्जा कर लिया गया था। 1730 के दशक तक, मराठा राजा दक्कन प्रायद्वीप में एकमात्र अधिकारी बन गया।
- मराठों ने अपने प्रभुत्व वाले क्षेत्र में चौथ और सरदेमुखी- उपज का क्रमशः एक चौथाई और दसवां हिस्सा लगाया।
- धीरे-धीरे मराठों ने राजस्थान, पंजाब, बंगाल, उड़ीसा, कर्नाटक और तमिलनाडु में अपना प्रभाव बढ़ाया। हालांकि इन क्षेत्रों को सीधे तौर पर शामिल नहीं किया गया था, लेकिन उन्हें मराठों को सम्मान देना पड़ा।

- इसने अन्य शासकों को अपना दुश्मन बना लिया और उन्होंने 1761 में पानीपत की तीसरी लड़ाई में उनका समर्थन करने से इनकार कर दिया।
- मराठों द्वारा क्षेत्रों पर विजय प्राप्त करने के बाद, उन्होंने खेती के तहत भूमि में वृद्धि की और धीरे-धीरे राजस्व में वृद्धि की। इससे बेहतर आर्थिक लाभ मिला। खेती के अलावा, मराठों द्वारा विभिन्न व्यापारिक गतिविधियों को प्रोत्साहित किया गया।
- ग्वालियर के सिंधिया, बड़ौदा के गायकवाड़ और नागपुर के भोंसले जैसे कुछ मराठा प्रमुखों ने शक्तिशाली सेनाएं खड़ी कीं। उज्जैन और इंदौर के शहर क्रमशः सिंधिया और होल्कर के शासन में समृद्ध हुए। ये शहर वाणिज्यिक और सांस्कृतिक केंद्रों के रूप में उभरे।
- चंदेरी में रेशम व्यापार का विस्तार पूना तक हुआ। बुरहानपुर में व्यापार अब पूना और नागपुर में भी फैल गया।

सिख

- पंजाब में सिखों के उदय से राज्य में क्षेत्रीय संस्कृति का निर्माण हुआ। गुरु गोबिंद सिंह ने राजपूतों और मुगलों के खिलाफ कई लड़ाई लड़ी।
- उन्होंने 1699 में खालसा पंथ की स्थापना की थी, जिसने गुरु गोबिंद सिंह की मृत्यु के बाद मुगल सत्ता के खिलाफ विद्रोह कर दिया था।
- बंदा बहादुर एक महत्वपूर्ण शासक के रूप में उभरा जिसने सिखों को स्वतंत्र घोषित किया और गुरु नानक और गुरु गोबिंद सिंह के नाम पर सिक्के चलाए।
- उसने सतलुज और जमुना नदियों के बीच अपना राज्य स्थापित किया। हालाँकि, बंदा बहादुर को 1715 में मुगलों द्वारा पकड़ लिया गया और मार डाला गया।

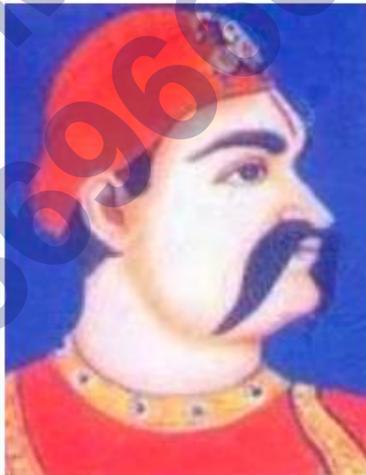


बंदा बहादुर

- कई सक्षम नेताओं के तहत, सिखों ने खुद को कई योद्धा बंदों में संगठित किया जिन्हें जत्था कहा जाता था और बाद में मिस्ल में। उनकी संयुक्त सेना को भव्य सेना या दल खालसा के रूप में जाना जाता था।
- उन्होंने रखी प्रणाली की शुरुआत की जहां उन्होंने किसानों को उनकी उपज का 20% भुगतान करने पर सुरक्षा प्रदान की।
- सिक्खों की सुसंगठित सेना ने कई बार मुगल सेना का सफलतापूर्वक विरोध किया। उन्होंने अहमद शाह अब्दाली का भी विरोध किया जिन्होंने मुगलों से पंजाब और सरहिंद पर कब्जा कर लिया था।
- 1765 में, खालसा ने फिर से अपनी संप्रभुता की घोषणा की और बंदा बहादुर द्वारा जारी किए गए एक के समान सोने के सिक्के चलाए।
- अठारहवीं शताब्दी के अंत में, महाराजा रणजीत सिंह ने सिख सैन्य समूहों को एकजुट किया और लाहौर में अपनी राजधानी के साथ एक शक्तिशाली सिख साम्राज्य की स्थापना की।

जाट

- सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी के अंत में जाटों ने अपनी शक्ति को मजबूत किया। उन्होंने 1680 के दशक में चूड़ामन के कुशल नेतृत्व में दिल्ली शहर पर अधिकार कर लिया।



जाटों ने चूड़ामन के कुशल नेतृत्व में दिल्ली शहर पर अधिकार कर लिया

- उन्होंने आगरा पर भी अधिकार कर लिया और कुछ समय के लिए दिल्ली और आगरा के संप्रभु शासक बन गए।

- चूंकि जाट अमीर किसान थे, उनके अधीन पानीपत और बल्लभगढ़ के शहर महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र बन गए।
- सूरज मल के मजबूत नेतृत्व में भरतपुर राज्य एक मजबूत राज्य बन गया। 1739 में नादिर शाह द्वारा शाही शहर की लूट के बाद दिल्ली में रहने वाले कई रईसों ने भरतपुर में शरण ली।
- सूरज सिंह के पुत्र जवाहर शाह के पास एक मजबूत सेना थी। उसने अपने 30,000 सैनिकों के साथ 20,000 मराठा और 15,000 सिख सैनिकों को काम पर रखा था।
- जाटों ने भरतपुर किले को पारंपरिक शैली में बनवाया था। उन्होंने डिग में आगरा और आमेर के बगीचों के समान सुंदर महल उद्यान बनवाए।
- उनके भवनों की स्थापत्य शैली शाहजहाँ द्वारा निर्मित इमारतों के समान थी।

NCERT SOLUTIONS

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 153)

प्रश्न 1 निम्नलिखित में मेल बैठाए:-

- | | |
|-------------|---------------------------|
| 1. सूबेदार | एक राजस्व कृषक |
| 2. फौजदार | उच्च अभिजात |
| 3. इजारादार | प्रांतीय सूबेदार |
| 4. मिस्ल | मराठा कृषक योद्धा |
| 5. चौथ | एक मुगल सैन्य कमांडर |
| 6. कुनबी | सिख योद्धाओं का समूह |
| 7. उमरा | मराठो द्वारा लगाया गया कर |

उत्तर -

- | | |
|-------------|---------------------------|
| 1. सूबेदार | प्रांतीय सूबेदार |
| 2. फौजदार | एक मुगल सैन्य कमांडर |
| 3. इजारादार | एक राजस्व कृषक |
| 4. मिस्ल | सिख योद्धाओं का समूह |
| 5. चौथ | मराठो द्वारा लगाया गया कर |
| 6. कुनबी | मराठा कृषक योद्धा |
| 7. उमरा | उच्च अभिजात |

प्रश्न 2 रिक्त स्थान की पूर्ति करें

(क) औरंगज़ेब ने _____ में एक लंबी लड़ाई लड़ी।

(ख) उमरा और जागीरदार मुगल _____ के शक्तिशाली अंग थे।

(ग) आसफ़ शाह ने हैदराबाद राज्य की स्थापना _____ में की।

(घ) अवध राज्य का संस्थापक _____ था।

उत्तर -

(क) औरंगज़ेब ने दक्कन में एक लंबी लड़ाई लड़ी।

(ख) उमरा और जागीरदार मुग़ल साम्राज्य के शक्तिशाली अंग थे।

(ग) आसफ़ शाह ने हैदराबाद राज्य की स्थापना अठारहवीं शताब्दी में की।

(घ) अवध राज्य का संस्थापक सआदत खां था।

प्रश्न 3 बताए सही या गलत।

(क) नादिरशाह ने बंगाल पर आक्रमण किया।

(ख) सवाई राजा जयसिंह इंदौर का शासक था।

(ग) गुरु गोबिंद सिंह सिक्खों के दसवें गुरु थे।

(घ) पुणे अठारवीं शताब्दी में मराठों की राजधानी बना।

उत्तर -

(क) नादिरशाह ने बंगाल पर आक्रमण किया। (गलत)

(ख) सवाई राजा जयसिंह इंदौर का शासक था। (गलत)

(ग) गुरु गोबिंद सिंह सिक्खों के दसवें गुरु थे। (सही)

(घ) पुणे अठारवीं शताब्दी में मराठों की राजधानी बना। (सही)

प्रश्न 4 सआदत खान के पास कौन-कौन से पद थे ?

उत्तर - सआदत खान 1722 में अवध का सूबेदार बना। सआदत खान बेशक बेहद काबिल थे इसी कारण कौम में उन्हें कई पदों से नवाजा गया था जैसे कि सूबेदारी, फ़ौजदारी एवं दीवानी।

प्रश्न 5 अवध और बंगाल के नवाबों ने जागीरदारी प्रथा को हटाने की कोशिश क्यों की ?

उत्तर – अवध और बंगाल के नवाबों ने जागीरदारी प्रथा को हटाने की कोशिश निम्नलिखित प्रकार से की जैसे :- बुरहान-उल-मुल्क ने अवध क्षेत्र में मुगल प्रभाव को कम करने के लिए मुगल द्वारा नियुक्त अधिकारियों की संख्या में कटौती की। जागीरों के आकार में भी कटौती की। नवाब के दरबार द्वारा नियुक्त अधिकारियों द्वारा सभी जिलों के राजस्व का फिर से निर्धारण किया क्योंकि अवध का नवाब इन राजस्व को अपने अधीन लाना चाहता था। कृषि भूमियों को अपने राज्यों में मिला लिया। साहुकारों और महाजनों जैसे कई नए सामाजिक समूहों राज्य की राजस्व प्रणाली के प्रबंध को प्रभावित किया।

प्रश्न 6 अठारहवीं शताब्दी में सिक्खों को किस प्रकार संगठित किया गया ?

उत्तर – अठारहवीं शताब्दी में कई योग्य नेताओं के नेतृत्व में सिक्खों ने अपने आप को पहले जत्थों में और बाद मिस्त्रों में संगठित किया। इन जत्थों और मिस्त्रों की मिली-जुली सेनाओं को दल खालसा कहा जाता था। उन दिनों दल खालसा बैसाखी और दीवाली के त्यौहारों पर अमृतसर में मिलते थे। इस बैठक में सिक्खों के लिए सामूहिक निर्णय लिए जाते थे जिन्हें गुरुमत्ता (गुरु के प्रस्ताव) कहा जाता था। सिक्खों ने राखी व्यवस्था स्थापित की जिसके अंतर्गत किसानों से उपज का 20 प्रतिशत कर के रूप में लिया जाता था। खालसा ने सन 1765 में अपना सिक्का गढ़ कर अपने स्वतंत्र राज्य की घोषणा की। एक मिसल के नेता महाराजा रणजीत सिंह ने विभिन्न मिसलों को एकत्रित करके 1799 में विशाल सिक्ख साम्राज्य की स्थापना की और सिक्खों को संगठित किया।

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 154)

प्रश्न 7 मराठा शासक दक्कन के पार विस्तार क्यों करना चाहते थे ?

उत्तर – मराठा राज्य एक अन्य शक्तिशाली राज्य था जो मुगल शासन का लगातार विरोध करके उत्पन्न हुआ था। आगे चलकर वे अपने शासन को दक्कन के पार विस्तार करना चाहते थे क्योंकि वे अपनी सेनाएँ समृद्ध बनाने के लिए सबके सामने खड़ा करने के लिए संसाधन जुटाना चाहते थे। उत्तरी मैदानी भागों के उपजाऊ क्षेत्रों पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए। वे अधिक से अधिक क्षेत्रों

से सरदेशमुखी कर वसूलना चाहते थे। और एक बड़े क्षेत्र पर अपना शासन स्थापित करना चाहते थे।

प्रश्न 8 आसफजाह ने अपनी स्थिति को मजबूत बनाने के लिए क्या-क्या नीतियाँ अपनाई ?

उत्तर – आसफजाह ने अपने लिए कुशल सैनिकों तथा प्रशासकों को उत्तरी भारत से लाया था। उसने वहाँ आकर मनसबदार नियुक्त किए और उनको जागिरे प्रदान की। वह दिल्ली से ना कोई आदेश लेता ना किसी काम में हस्तक्षेप करता। वह अपना कार्य सम्पूर्ण स्वतंत्र रूप से करता था।

प्रश्न 9 क्या आपके विचार से आज महाजन और बैंकर उसी तरह का प्रभाव रखते हैं, जैसा कि 18वीं सदी में रखा करते थे।

उत्तर – हमारे विचार में आज महाजन और बैंकर उस तरह का प्रभाव नहीं रखते, क्योंकि 18वीं सदी में महाजन और बैंकर निम्न तरीके से राज्य को प्रभावित करते थे, जैसे:- उस समय लोगों को ऋण लेना होता तो साहूकार, सेठ लोगों पर निर्भर रहना पड़ता था। उस समय साहूकार ऋण लेने वालों से कोई भी चीज़ उधार लेते थे और बदले में पैसे देते थे। आज कल लोग बैंक से बिना कोई चीज़ उधार दिए ऋण ले लेते हैं हालांकि ऐसी कई जगह और लोग हैं जिन्हें बैंक से ऋण नहीं मिल पाता और उन्हें अपनी ज़मीन, गहने उधार रखकर ऋण लेकर साथ में ब्याज भी चुकाना पड़ता है।

प्रश्न 10 क्या अध्याय में उल्लिखित कोई भी राज्य आपके अपने प्रांत में विकसित हुए थे।, यदि हां तो आपके विचार से 18वीं शताब्दी का जनजीवन आगे इक्कीसवीं शताब्दी के जनजीवन से किस प्रकार भिन्न था?

उत्तर – दिल्ली को भारतीय महाकाव्य महाभारत में प्राचीन इन्द्रप्रस्थ, की राजधानी के रूप में जाना जाता है। चंदबरदाई की रचना पृथ्वीराज रासो में तोमर वंश राजा अनंगपाल को दिल्ली का संस्थापक बताया गया है। ऐसा माना जाता है कि उसने ही 'लाल-कोट' का निर्माण करवाया था और लौह-स्तंभ दिल्ली लाया था। पहले दिल्ली को अलग अलग राजाओं द्वारा शासित किया जाता था। सबको राजाओं द्वारा चलाए गए निर्णयों का ही पालन करना पड़ता था। ये सब 18वीं सदी का इतिहास रहा है लेकिन 21वीं सदी में अब बहुत अंतर आ गया है। अब सब स्वतंत्र है। सब अपना

अपना काम करने में सक्षम है। कोई व्यक्ति कहीं भी रह सकता है। सबको खाने पीने, रहने, विचार प्रकट करने का मूल अधिकार है।

SHIVOM CLASSES
8696608541